दीनाभाना : बहुजन-क्रांति और अंतर्जातिय विवाह के महान् योद्धा

(28 फरवरी 1928 : 28 नवंबर 2011)

(कृपया इसका प्रिंट निकलवाकर पढ़ें और पढ़वाएं)

आभार : दयाराम एवं विजय टाक वाल्मीकि
सुगत सांस्कृतिक शैक्षिक एवं सामाजिक संस्था,
लखनऊ,(उ.प्र.) – 28.11.2021
अभिनेत्री : अनामिका सिंह
लेखक : ए के सिंह
मोबा : 7355175480

बंधुओं : जय संविधान, जय विज्ञान, जय लोकतंत्र, जय भारत, नमो बुद्धाय, जय भीम, जय अर्जक...

....

भारतीय शासन अधिनियम सन 1919 के अंतर्गत साइमन कमीशन की नियुक्ति। 3 फरवरी 1928 को साइमन कमीशन का भारत में प्रवेश। पूरे देश में गहमागहमी का माहौल, क्योंकि साइमन कमीशन इस बात की जांच करने आ रहा था, कि ब्रिटिश भारत के शासन काल में शिक्षा की वृद्धि अर्थात क्या सबको समान शिक्षा मिल रही है? अल्पसंख्यक वर्गों के हित में विकास कार्य की समीक्षा। देश के सभी नागरिकों के साथ समता का व्यवहार आदि पर आकलन कर रिपोर्ट तैयार करना। और उस रिपोर्ट को सरकार के समक्ष प्रस्तुत करना। जिससे सरकार उसे लागू कराने का

समुचित प्रयास कर सके। साइमन कमीशन भारत में दबी-पिछड़ी जातियों के साथ अवमानना दुर्व्यवहार तथा शोषण की भी जांच कर रहा करेगा।

इसी दौरान राजस्थान राज्य की राजधानी जयपुर से 40 किलोमीटर दूर वागास गांव में भाना भंगी के घर 28 फरवरी 1928 को एक बालक का जन्म हुआ। मां बाप एवं सभी परिवार जनों ने सोच समझकर बालक का नाम दीनानाथ रखा। बाद में परिवारजनों ने दीनानाथ नाम से नाथ शब्द हटाकर, पिता का नाम जोड़कर दीनाभाना कर दिया। जिन्हें लोग दीनानाथ के स्थान पर दीनाभाना नाम से पुकारने लगे। दीनाभाना अपने मां-बाप की चौथी संतान थे। वह कुल 5 भाई और एक बहन थे। दीनाभाना का जिस समय जन्म हुआ, उस समय राजस्थान में जातीय भेदभाव अपनी चरम सीमा पर था। भंगी की परछाई से भी लोग कतराते थे। स्कूलों का दरवाजा इनके लिए बंद था। ऐसी दशा में वे पढ़ लिख नहीं सकते थे।

दीनाभाना जब 14-15 साल के हुए, तो उनके सामने एक घटना घटी। घटना कुछ ऐसी थी कि गांव के ही एक जाट बंधु के यहां दीनाभाना के पिताजी ने एक जानवरों को चारा खिलाने के लिए, जिसको हौदा बोलते हैं, बना कर दिया। काफी समय तक उसकी मजदूरी वह जाट बंधु नहीं दे पाया। तो उसने खुशी-खुशी एक भैंस दीनाभाना के पिता जी को दे दी। एक दिन घर के सामने से जमीदार ठाकुर साहब निकल रहे थे। उन्हें यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ, कि भंगी के घर के सामने भैंस? पूछा किसकी है। पता लगने पर उन्होंने तुरंत कहा कि उसको जाकर वापस जाट के यहां बांध आओ, नहीं तो इसको 5 जूते लगाओ। और बोला सूअर पालने वाला भैंस कैसे रख सकता है? दीना भाना के पिताजी डर गए और भैंस को वापस कर आए।

इस घटना से आहत दीनाभाना 1937 में दिल्ली अपने भाई के पास चले गए। एक दिन काम धंधे की तलाश में ढाबे पर पहुंचे, जहां एक महिला रोटी बनाने का काम करती थी, उसी से अपने लिए काम की चर्चा की। दीनाभाना की बोली भाषा से वह महिला बहुत प्रभावित हुई। वह महिला पुणे शहर से बेबसी और लाचारी में दिल्ली

आकर ढाबे पर रोटी बनाने का कार्य करती थी। वह महिला सुनार जाति से संबंधित थी। वह झुग्गी झोपड़ियों में अपनी बेटी सुमन के साथ रह रही थी। उसी महिला को दीनाभाना की दशा पर बहुत दया आ गई और उसने कहा कि तुम मेरे यहां आते जाते रहो, मैं कोई न कोई काम-धंधा जरूर बता दूंगी। लेकिन इसी बीच ढाबे पर ग्राहकों की संख्या घटने लगी, और एक दिन ढाबे के मालिक ने उसकी छुट्टी कर दी। और वह औरत अपनी बेटी सुमन को लेकर पूना वापस चली गई। दीनाभाना को जब पता चला, तो वह भी काम धंधे की तलाश में पूना शहर के लिए चले गए। काम धंधे के लिए और भी जगह जा सकते थे, लेकिन ऐसा संभव नहीं था क्योंकि उनकी सुमन तो पूछने में थी। वे सन् 1946 में पूना पहुंचे और 1948 में रक्षा विभाग में नौकरी मिल जाने से सुमन की खुशी का ठिकाना न रहा। एक तरफ जाति की जकड़न, तो दूसरी तरफ बेटी का शादी की चिंता। जाति प्रथा की सारी मर्यादाओं को ध्वस्त करते हुए दीनाभाना और सुमन प्रीत की डोरी में बंध गए। और आजीवन उसी डोरी में बंधे रहे।

विभाग में वैसे तो दीनाभाना लेबर के तौर पर काम पर लगे थे, लेकिन ऑफिस के लोग उनसे झाड़ू लगवाने का कार्य करते थे। क्योंकि उन्हें उनकी भंगी जाति पता थी। लेकिन दीनाभाना हिम्मत नहीं हारे। क्योंकि दिल्ली में पचकुंईया नामक क्षेत्र हैं, जहां उन्होंने 1944 में बाबासाहेब डॉक्टर आंबेडकर का भाषण सुना था। बाबासाहब डॉ अंबेडकर कि वो ज्यादा से ज्यादा पढ़ाई लिखाई वाली बातों से बहुत प्रेरित थे। लेकिन ज्यादा पढ़ नहीं सके। पुणे में जाने के बाद कुछ पढ़ाई शुरू की, थोड़ी बहुत अंग्रेजी पढ़ी। उसकी बदौलत 1967 में दीनाभाना पुणे में डिफेंस में निरीक्षक के पद पर प्रमोशन मिल गया।

सरकारी नौकरी करते हुए सन 1986 में सीनियर इंस्पेक्टर पद से सेवानिवृत्त हुए। सेवानिवृत्ति के बाद वे कभी घर नहीं रहे। सामाजिक आंदोलन के कारण से उन्हें फुर्सत ही नहीं रही। सेवानिवृत्ति के बहुत दिनों बाद पता चला, कि उनके गले में

कैंसर है। बहुत इलाज चला कैंसर का, ऑपरेशन होने के बाद अचानक उनकी तबीयत बिगड़ गई और 28 नवंबर 2011 में बहुजन क्रांति के महान योद्धा दीनाभाना चिरनिद्रा में सो गए। उनको शत-शत नमन्...

फुले अंबेडकर की विचारधारा के वाहक माननीय दयाराम एवं माननीय विजय टांक वाल्मीकि द्वारा लिखित पुस्तक "मूलनिवासी बहुजन क्रांति" के महान योद्धा दीनाभाना को पढ़ा। यह पुस्तक आज के संदर्भ में बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि सफाईकर्मी जातियों के पढ़े-लिखे लोग, फूले-अंबेडकरी विचारधारा से कोसों दूर हैं। लेकिन दीनाभाना जैसी शख्सियत, जिनका सफाई कर्मी जाति में जन्म हुआ, और जो दर्जा चार पास कर्मचारी थे यानी ज्यादा पढ़े लिखे भी नहीं थे। उनके अंदर मान-सम्मान और पमान की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। क्योंकि वह बाबासाहब अंबेडकर की विचारधारा के संपर्क में आ गए थे। इसलिए विभाग के बड़े अधिकारियों के विरुद्ध अपने समाज की न्यायोचित मांगों के लिए उनके सामने डटकर खड़े हुए। वह न तो उनके सामने झुके, न ही रुके और अंत में अधिकारियों को उनकी बातों के सामने झुकना पड़ा : डी.डी. कल्याणी।

नेगोशिएबल इंस्ट्रूमेंट एक्ट 1881 के अनुसार संस्थान के प्रमुख को कैलेंडर वर्ष प्रारंभ होने के पूर्व में संस्थान की सभी यूनियनों की बैठक करके पूरे वर्ष के लिए छुट्टियां तय करना होता है। तदनुसार पुणे रक्षा संस्थान के प्रमुख ने बैठक बुलाई। 36 वर्ष के एक व्यक्ति ने चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी संघ का प्रतिनिधित्व किया। अन्य दूसरी सभी यूनियनों, जिसमें से ज्यादातर का प्रतिनिधित्व ब्राह्मणों द्वारा किया जा रहा था, ने अपने पूर्वजों की जयंती पर यह हिंदू, ईसाई और इस्लामी त्योहारों के अवसर पर छुट्टियों के लिए अनुरोध किया। बैठक की कार्यवाही मिनट रजिस्टर में दर्ज की गई। और हर किसी को रजिस्टर में हस्ताक्षर करने के लिए कहा गया। जब इस आदमी अर्थात (चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी संघ के प्रतिनिधि) की बारी आई, तो उन्होंने रजिस्टर में हस्ताक्षर करने से इंकार कर दिया। जब संस्थान के प्रमुख ने पूछा, कि

वह रजिस्टर में हस्ताक्षर क्यों नहीं कर रहे हैं। तो वह बोले, कि चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी संघ के सदस्यों के लिए छुट्टियां घोषित करने के बारे में उनसे पूछा नहीं गया। उन्होंने कहा कि वह 14 अप्रैल, जो कि बाबासाहेब आंबेडकर का जन्म दिन है, के अवसर पर छुट्टी चाहते हैं। संस्थान प्रमुख जो कि एक महाराष्ट्रीयन ब्राह्मण था ने कहा, कि तुम महाराष्ट्रीयन नहीं हो, तुम्हारा डॉक्टर अंबेडकर से क्या लेना देना है। उस आदमी ने कहा, कि वह मेरे बाबासाहब हैं, और मैं रजिस्टर में हस्ताक्षर नहीं करूंगा, जब तक कि डॉ बाबासाहेब आंबेडकर के जन्मदिन पर छुट्टी घोषित नहीं की जाती है। उनको धमकी दी गई, कि या तो रजिस्टर में हस्ताक्षर करो, वरना सेवा से हटा दिया जाएगा। संस्थान प्रमुख की धमकी के बावजूद भी आदमी नहीं झुका, उन्होंने बैठक छोड़ दी। और माननीय खापर्डे साहब से मुलाकात की और उनको पूरी घटना सुनाई। माननीय खापर्डे साहब उनको मान्यवर कांशीराम साहब के पास लेकर गए। तीनों ने मिलकर संघ की ताकत के साथ एकजुट होकर प्रबंधन के साथ लड़ाई लड़ी। और डॉक्टर बाबासाहेब अंबेडकर के जन्मदिन पर छुट्टी घोषित करवाई। वह आदमी कोई और नहीं, माननीय दीनाभाना साहेब ही थे : बी.डी. बोरकर।

जिस समाज का अपना कोई इतिहास नहीं होता, उसका कोई भविष्य नहीं होता। भारत में हर जाति का अपना एक समाज है। जिस जाति का अपना कोई इतिहास पुरुष नहीं होता, तो वह जाति यत्र तत्र सर्वत्र अपनी जाति में इतिहास पुरुष ढूंढती है। इतिहास प्रेरणा प्रदान करता है। प्रेरणा से समाज में जागृत आती है। जागृति समाज में सोच निर्माण करती है। सोच राजनीतिक महत्वाकांक्षा को जन्म देती है। राजनीतिक महत्वाकांक्षा से राजनीतिक सत्ता की ललक पैदा होती है। राजनीतिक सत्ता की ललक से ही कोई समाज शासक बनता है। इस दृश्य से यदि देखा जाए, तो मेहतर जाति का त्याग और बलिदान इतिहास के पन्नों पर दर्ज है।

गुजरात का खुशरव भंगी ब्राह्मण धर्म से तंग आकर इस्लाम ग्रहण कर अलाउद्दीन की सेना में भर्ती होने के बाद 13 अप्रैल 1320 को अपनी बुद्धिमत्ता के बल पर

दिल्ली सल्तनत पर शासक बना। सन 1857 में स्वतंत्रता आंदोलन की चिंगारी कोलकाता से 16 किलोमीटर दूर बैरकपुर छावनी के कारतूस के कारखाने से उठी थी। जहां मातादीन भंगी कार्यरत था। मातादीन को प्यास लगी, तो उसने उसी कारखाने में कार्यरत सैनिक मंगल पांडे से पानी का लोटा मांगा, मंगल पांडे ने लोटा मांगने के कारण मातादीन का जातिय अपमान किया। मातादीन ने आक्रोश भरे शब्दों में कहा, "बड़ा आया है ब्राह्मण का बेटा, जिन कारतूसों का उपयोग तुम करते हो, उसपर गाय और सुअर की चर्बी लगाई जाती है। और उन्हें तुम अपने दांतो से तोड़कर बंदूक में भरते हो। उस समय तुम्हारा ब्राह्मण धर्म कहां चला जाता है। क्या किसी प्यासे व्यक्ति को पानी पीने के लिए लोटा देने से तुम्हारा धर्म नष्ट हो जाएगा?" धिक्कार है तुम्हारे इस ब्राह्मणत्व को। मातादीन भंगी के धिक्कार ने दम्भी और धर्मांध ब्राह्मण मंगल पांडे को देशभक्त बना दिया। मातादीन भंगी के कारण मंगल पांडे को इतिहास के पन्नों में जगह मिली। जिसका सारा श्रेय मातादीन भंगी को जाता है। बल्लू मेहता जो उत्तर प्रदेश के एटा जिले का रहने वाला था, जिसके कारण अंग्रेजों की नींद हराम हो गई थी, उसके खौफ से ब्रिटिश हुकूमत में दहशत का वातावरण पैदा कर दिया था। वह जब पकड़ा गया, तो 26 मई 1857 को ब्रिटिश हुकूमत ने उसे पेड़ से रस्सी से बांधकर गोलियों से भून दिया था। देश की आजादी के लिए बलिदान हो गया। स्वामी श्रद्धानंद के नेतृत्व में संघर्ष कर रहे रामचंद्र भंगी रणबांकुरों के साथ देश के खातिर बलिदान हो गया।

महावीरी : कैराना में जन्मी वीरांगना महावीरी भंगी जिनका परिवार सूप और झाड़ू बनाकर अपना गुजर-बसर कर रहा था। अनपढ़ होने के बावजूद उन्होंने भंगी जाति की महिलाओं के साथ हाथ में हंसिया और दरांती लेकर ब्रिटिश सेना पर हमला बोल दिया। मातृभूमि की रक्षा के लिए महावीरी भंगी ब्रिटिश सेना की कोपभाजन बनी और जंगे मैदान में वीरगति को प्राप्त हुई।

सामाजिक क्रांति का बिगुल बजाने वाले विश्वरत्न डॉक्टर बाबासाहब अंबेडकर के कारवां को आगे बढ़ाने वाले लोगों में मेहतर जाति में जन्में प्रख्यात लेखक और साहित्यकार भगवानदास, ओमप्रकाश बाल्मीकि, कंवल भारती, जो मूलनिवासी बहुजन समाज के विभूषण हैं। भला उन्हें कोई कैसे भूल सकता है। पंजाब की चूड़ा और चमार जातियां, जिन्होंने डॉक्टर अंबेडकर द्वारा स्थापित समता सैनिक दल और शेड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन में कंधे से कंधा मिलाकर उनका साथ दिया। उनमें प्रमुख थे : फिरोजपुर से हरवंश सिंह, जालंधर में राम रखा शुभ, बालमुकुंद, चुन्नीलाल थापर, राघवराम, फकीर चंद नाहर, भागमल पागल, मोधन सिंह गिल, सेठ किशन चंद दास आदि। तेलू राम वेदवान सफाई कर्मचारी यूनियन के लीडर तथा शेड्यूल कास्ट फेडरेशन के अध्यक्ष भी थे। बालमुकुंद शेड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन के जनरल सेक्रेटरी भी थे।

हिंदू धर्म में अपने अस्तित्व की पहचान के लिए डॉक्टर अंबेडकर ने महाड़ जल सत्याग्रह तथा नाशिक कालाराम मंदिर प्रवेश का आंदोलन प्रारंभ किया। जिसमें अछूतों पर लाठियां बरसाई गईं। हिंदू हृदय का असली चेहरा सभी आंदोलनकारियों को दिखा। लंदन के गोलमेज सम्मेलन में डॉक्टर अंबेडकर ने प्रस्ताव रखा, कि "अछूत हिंदू नहीं हैं इन्हें अल्पसंख्यक का दर्जा प्रदान किया जाए।" डॉक्टर अंबेडकर की बात मान ली गई और 17 अगस्त 1932 को उन्होंने कम्युनल अवार्ड जीता। इस गोलमेज सम्मेलन में पंजाब के चूड़ा और चमार दोनों मिलकर डॉक्टर अंबेडकर का साथ दे रहे थे। जिसके कारण द्विजातियों को अपना राजनीतिक भविष्य खतरे में नजर आ रहा था। क्योंकि पंजाब स्टेट की राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने में इन दोनों अछूत जातियों के पास पर्याप्त मत था।

डॉक्टर अंबेडकर भंगी जाति को तन और मन दोनों को तंदुरुस्त रखने के लिए उन्हें संदेश देते हैं: "हिंदू धर्म ने हमारे लोगों से उत्साह छीन लिया है। ब्राह्मण की पत्नी जब बच्चे को जन्म देती है तो उसका मुंह हाईकोर्ट की तरफ होता है, वह सोचती है

कि मेरा बेटा होगा तो बड़ा होकर हाईकोर्ट का जज बनेगा। और हमारी औरतें गर्भवती होती है तो सोचती हैं, कि मेरे यहां जब बेटा होगा तो मुंसिपल कमेटी में सफाई कर्मचारी होगा।

अगले जन्म और पिछले जन्म का पाठ पढ़ाकर गांधी ने भंगी जाति के वर्तमान को ही चौपट कर दिया। गांधी उस समय के सबसे चर्चित हिंदू नेता थे। पंजाब के चूड़ा-चमारों का सामाजिक ध्रुवीकरण तोड़ने के लिए गांधी ने भंगी बस्ती में अपनी बकरी के साथ डेरा जमाया। भंगी हमेशा भंगी बना रहे, इसलिए उन्हें हरिजन की पहचान दी : विजय टाक वाल्मीकि।

समाधान : सफाई समाज में जन्में शिक्षित और सक्षम व्यक्तियों को यह मांग करनी चाहिए, कि जो लोग भी हमसे किसी भी तरह की सहायता की उम्मीद करते हैं, या हमारा वोट पाना चाहते हैं, ऐसे लोगों को हमारे साथ वैवाहिक रिश्ते कायम करने होंगे। जितने भी एससी, एसटी, ओबीसी के सामाजिक समारोह होते हैं, उनमें उन महिलाओं/पुरुषों को सम्मानित किया जाए, जिन्होंने बाल्मीकि/भंगी/मेहतर समाज के साथ में रिश्ते किए हैं। अगर ऐसा नहीं होता है, तो अभी बहुजन समाज में ही सुधार की बहुत जरूरत है। लेकिन इसके लिए सफाई समाज के कद्दावर लोगों को ही आगे आना होगा : ए. के. सिंह।

(कृपया इसका प्रिंट निकलवाकर पढ़ें और पढ़वाएं)

-:समाप्त:-

सुगत सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं सामाजिक संस्था,

लखनऊ (उ.प्र.)

अभिनेत्री : अनामिका सिंह

लेखक : ए. के. सिंह

7355175480